गजानन माधव मुक्तिबोध

प्रगतिवाद के प्रखर और मौलिक चिंतक आलोचकों में मुक्तिबोध का नाम सर्वाधिक प्रमुख है | उनका कहना है कि कविता वैयक्तिक प्रयास कम सांस्कृतिक प्रक्रिया है | वे कहानीकार भी थे और समीक्षक भी | मराठी भाषी हिंदी कवि गजानन माघव मुक्तिबोध का जन्म 13 नवम्बर, 1917 को मुरैना जिले शिवपुरी, ग्वालियर, मध्य प्रदेश में हुआ था | उनके पिता पुलिस विभाग में इंस्पेक्टर थे और उनका तबादला प्राय: होता रहता था | इसलिए मुक्तिबोध की पढ़ाई में बाधा पड़ती रहती थी | नागपुर विश्वविद्यालय से उन्होंने हिंदी में एम.ए. किया |

मुक्तिबोध घुमक्कड़ प्रकृति के थे | उनकी कविताओं में बावड़ी, पुराने कुएं, वीरान खण्डहर, पठार, बरगद आदि अनेक शब्द बार-बार आते हैं | वे अपनी लम्बी कविताओं के लिए प्रसिद्ध थे | उन्होंने निबंध, कहानियां तथा समीक्षाएं भी लिखीं | मुक्तिबोध तारसप्तक के पहले कवि थे | श्रीकांत वर्मा ने 'चांद का मुंह टेढ़ा है' काव्य संग्रह के प्रथम संस्करण में लिखा है, 'किसी और कवि की कविताएं उनका इतिहास न हों, मुक्तिबोध की कविताएं अवश्य उनका इतिहास हैं, जो इन कविताओं को समझेंगे उन्हें मुक्तिबोध को किसी और रूप में समझने की जरूरत नहीं पड़ेगी |' शमशेर बहादुर सिंह का कहना था, 'किसी ने मुक्तिबोध की एक बरगद से तुलना की है, जो अवश्य ही उनकी एक प्रिय इमेज है | मगर यह बरगद नहीं- चट्टान है | शिलाओं पर शिलाएं | झरने कहीं बिरले ही | केवल गहरी बावड़ियां, सूखे कुएं, झाड़झंखड़, उंची-नीची अनंत पगडंडियां | जैसे मालवा के पठार और मध्यप्रदेश की उबड़-खाबड़ धरती और इस धरती के आतंकमय, रहस्यमय इतिहास और उनके बीच लहूलुहान मानव |'

उनकी प्रमुख रचनाएं -

काव्य	चांद का मुंह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक धूल, तारसप्तक में रचनाएं प्रकाशित
आलोचना	नयी कविता का आत्मसंघर्ष, कामायनी:एक पुनर्विचार, समीक्षा की समस्याएं, नए साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र
कहानी	काठ का सपना, सतह से उठता आदमी
उपन्यास	विपात्र
आत्माख्यान	एक साहित्यिक की डायरी
इतिहास	भारत: इतिहास और संस्कृति
रचनावली	मुक्तिबोध रचनावली (सात खंड)

लंबी कविताएं लिखने वाले कवि मुक्तिबोध की बहुत कम आयु मात्र 47 वर्ष में ही 11 सितम्बर, 1964 को मृत्यु हुई |